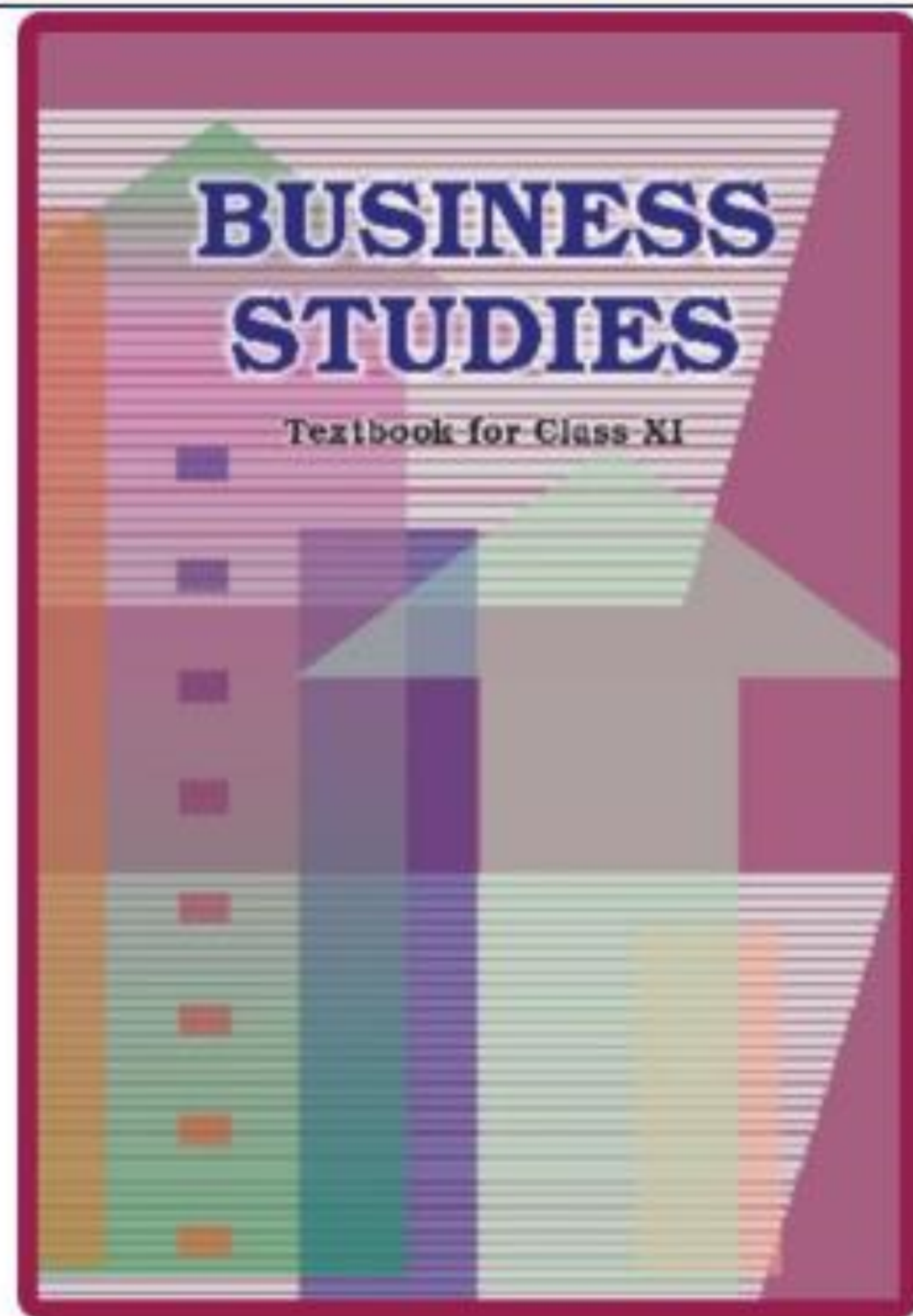


Chapter 8:

Business Finance

Part 3



Commercial Paper

- Commercial Paper (CP) is an unsecured money market instrument issued in the form of a promissory note.
- It was introduced in India in 1990 for enabling highly rated corporate borrowers to diversify their sources of short-term borrowings and to provide an additional instrument to investors.
- वाणिज्यिक पत्र (सीपी) एक असुरक्षित मुद्रा बाजार लिखत है जो वचन पत्र के रूप में जारी किया जाता है।
- इसे भारत में 1990 में उच्च श्रेणी के कॉर्पोरेट उधारकर्ताओं को अपने अल्पकालिक उधार के स्रोतों में विविधता लाने और निवेशकों को एक अतिरिक्त साधन प्रदान करने के लिए पेश किया गया था।

9.30-9.35 ✓

- Subsequently, primary dealers and all-India financial institutions were also permitted to issue CP to enable them to meet their short-term funding requirements for their operations.
- इसके बाद, प्राथमिक डीलरों और अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों को भी अपने परिचालनों के लिए अल्पकालिक वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाने के लिए वाणिज्यिक पत्र जारी करने की अनुमति दी गई।

- Individuals, banking companies, other corporate bodies
(registered or incorporated in India) and unincorporated bodies,
NonResident Indians (NRIs) and Foreign Institutional Investors
(FIIIs) etc. can invest in CPs.
- व्यक्ति, बैंकिंग कंपनियाँ, अन्य कॉर्पोरेट निकाय (भारत में पंजीकृत या निगमित) और अनिगमित निकाय, अनिवासी भारतीय (एनआरआई) और विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) आदि वाणिज्यिक पत्रों में निवेश कर सकते हैं।

- CP can be issued for maturities between a minimum of 7 days and a maximum of up to one year from the date of issue in denominations of Rs.5 lakh or multiples thereof. However, the maturity date of the CP should not go beyond the date up to which the credit rating of the issuer is valid.
- वाणिज्यिक पत्र न्यूनतम 7 दिनों से लेकर अधिकतम एक वर्ष की परिपक्वता अवधि के लिए 5 लाख रुपये या उसके गुणजों के मूल्यवर्ग में जारी किए जा सकते हैं। हालाँकि, वाणिज्यिक पत्र की परिपक्वता तिथि उस तिथि से आगे नहीं बढ़नी चाहिए जिस तक जारीकर्ता की क्रेडिट रेटिंग मान्य है।

Merits

- (i) A commercial paper is sold on an unsecured basis and does not contain any restrictive conditions;
 - (ii) As it is a freely transferable instrument, it has high liquidity;
 - (iii) It provides more funds compared to other sources. Generally, the cost of CP to the issuing firm is lower than the cost of commercial bank loans;
-
- (i) वाणिज्यिक पत्र असुरक्षित आधार पर बेचा जाता है और इसमें कोई प्रतिबंधात्मक शर्तें नहीं होतीं;
 - (ii) चूँकि यह एक स्वतंत्र रूप से हस्तांतरणीय लिखत है, इसलिए इसमें उच्च तरलता होती है;
 - (iii) यह अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक धनराशि प्रदान करता है। सामान्यतः, जारीकर्ता फर्म के लिए वाणिज्यिक पत्र की लागत वाणिज्यिक बैंक ऋणों की लागत से कम होती है;

- (iv) A commercial paper provides a continuous source of funds. This is because their maturity can be tailored to suit the requirements of the issuing firm. Further, maturing commercial paper can be repaid by selling new commercial paper;
- v) Companies can park their excess funds in commercial paper thereby earning some good return on the same

- (iv) वाणिज्यिक पत्र धन का एक सतत स्रोत प्रदान करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी परिपक्वता को जारीकर्ता फर्म की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है। इसके अलावा, परिपक्व हो रहे वाणिज्यिक पत्र का भुगतान नए वाणिज्यिक पत्र बेचकर किया जा सकता है;
- v) कंपनियाँ अपनी अतिरिक्त धनराशि वाणिज्यिक पत्र में निवेश कर सकती हैं जिससे उन्हें उस पर अच्छा रिटर्न मिल सकता है।

Limitations

- (i) Only financially sound and highly rated firms can raise money through commercial papers. New and moderately rated firms are not in a position to raise funds by this method;
 - (ii) The size of money that can be raised through commercial paper is limited to the excess liquidity available with the suppliers of funds at a particular time;
- (i) केवल वित्तीय रूप से सुदृढ़ और उच्च रेटिंग वाली कंपनियाँ ही वाणिज्यिक पत्रों के माध्यम से धन जुटा सकती हैं। नई और मध्यम रेटिंग वाली कंपनियाँ इस पद्धति से धन जुटाने की स्थिति में नहीं हैं;
- (ii) वाणिज्यिक पत्रों के माध्यम से जुटाई जा सकने वाली धनराशि किसी विशेष समय पर निधि आपूर्तिकर्ताओं के पास उपलब्ध अतिरिक्त तरलता तक सीमित होती है;

(III) Commercial paper is considered an impersonal method of financing because it doesn't rely on personal relationships between the issuer and investors, and a firm cannot easily extend its maturity if facing financial difficulties because there's no built-in grace period for redemption. Companies are expected to meet the original maturity date, which is a strict, short-term obligation, highlighting the impersonal and unforgiving nature of this financing instrument.

(III) वाणिज्यिक पत्र को वित्तपोषण का एक अवैयक्तिक तरीका माना जाता है क्योंकि यह जारीकर्ता और निवेशकों के बीच व्यक्तिगत संबंधों पर निर्भर नहीं करता है, और एक फर्म वित्तीय कठिनाइयों का सामना करने पर आसानी से अपनी परिपक्वता का विस्तार नहीं कर सकती है क्योंकि मोचन के लिए कोई अंतर्निहित अनुग्रह अवधि नहीं है। कंपनियों से मूल परिपक्वता तिथि को पूरा करने की उम्मीद की जाती है, जो एक सख्त, अल्पकालिक दायित्व है, जो इस वित्तपोषण साधन की अवैयक्तिक और निर्मम प्रकृति को उजागर करता है।

Issue of Shares

equity share
preference share

- The capital obtained by issue of shares is known as share capital. The capital of a company is divided into small units called shares. Each share has its nominal value. For e.g, a company can issue 1,00,000 shares of Rs. 10 each for a total value of Rs. 10,00,000. The person holding the share is known as shareholder
- शेयर जारी करके प्राप्त पूँजी को शेयर पूँजी कहते हैं। किसी कंपनी की पूँजी छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित होती है जिन्हें शेयर कहते हैं। प्रत्येक शेयर का अपना नाममात्र मूल्य होता है। उदाहरण के लिए, एक कंपनी 10 रुपये प्रति शेयर के 1,00,000 शेयर जारी कर सकती है जिनका कुल मूल्य 10,00,000 रुपये है। शेयर रखने वाले व्यक्ति को शेयरधारक कहते हैं।

Equity Shares

- Equity shares is the most important source of raising long term capital by a company. Equity shares represent the ownership of a company and thus the capital raised by issue of such shares is known as ownership capital or owner's funds.
- इक्विटी शेयर किसी कंपनी द्वारा दीर्घकालिक पूंजी जुटाने का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इक्विटी शेयर किसी कंपनी के स्वामित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसलिए ऐसे शेयरों के निर्गम द्वारा जुटाई गई पूंजी को स्वामित्व पूंजी या स्वामी निधि कहा जाता है।

- Equity share capital is a prerequisite to the creation of a company. Equity shareholders do not get a fixed dividend but are paid on the basis of earnings by the company. They are referred to as 'residual owners' since they receive what is left after all other claims on the company's income and assets have been settled.
- किसी कंपनी के निर्माण के लिए इक्विटी शेयर पूंजी एक पूर्वापेक्षा है। इक्विटी शेयरधारकों को कोई निश्चित लाभांश नहीं मिलता, बल्कि कंपनी की आय के आधार पर भगतान किया जाता है। उन्हें 'अवशिष्ट स्वामी' कहा जाता है क्योंकि कंपनी की आय और परिसंपत्तियों पर अन्य सभी दावों के निपटारे के बाद जो बचता है, वह उन्हें प्राप्त होता है।

— voting right

- They enjoy the reward as well as bear the risk of ownership. Their liability, however, is limited to the extent of capital contributed by them in the company. Further, through their right to vote, these shareholders have a right to participate in the management of the company.

- वे लाभ का आनंद लेने के साथ-साथ स्वामित्व का जोखिम भी उठाते हैं। हालाँकि, उनकी देयता कंपनी में उनके द्वारा निवेशित पूंजी की सीमा तक सीमित होती है। इसके अलावा, अपने मतदान के अधिकार के माध्यम से, इन शेयरधारकों को कंपनी के प्रबंधन में भाग लेने का अधिकार होता है।

Merits:

(i) Equity shares are suitable for investors who are willing to assume risk for higher returns; /इक्विटी शेयर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हैं जो अधिक रिटर्न के लिए जोखिम उठाने को तैयार हैं;

(ii) Payment of dividend to the equity shareholders is not compulsory.

Therefore, there is no burden on the company in this respect;

(iii) Equity capital serves as permanent capital as it is to be repaid only at the time of liquidation of a company. As it stands last in the list of claims, it provides a cushion for creditors, in the event of winding up of a company;

(ii) इक्विटी शेयरधारकों को लाभांश का भुगतान अनिवार्य नहीं है। इसलिए, इस संबंध में कंपनी पर कोई बोझ नहीं है;

(iii) इक्विटी पूंजी स्थायी पूंजी के रूप में कार्य करती है क्योंकि इसका भुगतान केवल कंपनी के परिसमापन के समय ही किया जाना होता है। चूंकि यह दावों की सूची में सबसे अंत में आता है, इसलिए यह कंपनी के समापन की स्थिति में लेनदारों के लिए एक सुरक्षा प्रदान करता है;

(iv) Equity capital provides credit worthiness to the company and confidence to prospective loan providers;

(v) Funds can be raised through equity issue without creating any charge on the assets of the company. The assets of a company are, therefore, free to be mortgaged for the purpose of borrowings, if the need be;

(iv) इक्विटी पूंजी कंपनी को ऋण-योग्यता और संभावित ऋणदाताओं को विश्वास प्रदान करती है;

(v) कंपनी की परिसंपत्तियों पर कोई भार डाले बिना इक्विटी निर्गम के माध्यम से धन जुटाया जा सकता है। इसलिए, यदि आवश्यकता हो, तो कंपनी की परिसंपत्तियों को उधार लेने के उद्देश्य से गिरवी रखने की स्वतंत्रता होती है;

Limitations:

- (i) Investors who want steady income may not prefer equity shares as equity shares get fluctuating returns;
 - (ii) The cost of equity shares is generally more as compared to the cost of raising funds through other sources;
 - (iii) Issue of additional equity shares dilutes the voting power, and earnings of existing equity shareholders;
 - iv) More formalities and procedural delays are involved while raising funds through issue of equity share.
- (i) जो निवेशक स्थिर आय चाहते हैं, वे इक्विटी शेयरों को पसंद नहीं कर सकते क्योंकि इक्विटी शेयरों पर रिटर्न में उतार-चढ़ाव होता रहता है;
- (ii) इक्विटी शेयरों की लागत आमतौर पर अन्य स्रोतों से धन जुटाने की लागत की तुलना में अधिक होती है;
- (iii) अतिरिक्त इक्विटी शेयरों के जारी होने से मौजूदा इक्विटी शेयरधारकों की वोटिंग शक्ति और आय कम हो जाती है;

Preference Shares

The capital raised by issue of preference shares is called preference share capital. The preference shareholders enjoy a preferential position over equity shareholders in two ways:

- (i) receiving a fixed rate of dividend, out of the net profits of the company, before any dividend is declared for equity shareholders; and
- (ii) receiving their capital after the claims of the company's creditors have been settled, at the time of liquidation.

अधिमान्य शेयर जारी करके जुटाई गई पूँजी को अधिमान्य शेयर पूँजी कहते हैं। अधिमान्य शेयरधारक, इक्विटी शेयरधारकों पर दो तरह से अधिमान्य स्थिति का आनंद लेते हैं:

- (i) इक्विटी शेयरधारकों के लिए कोई लाभांश घोषित किए जाने से पहले, कंपनी के शोध लाभ में से एक निश्चित दर का लाभांश प्राप्त करना; और
- (ii) कंपनी के ऋणदाताओं के दावों का निपटान हो जाने के बाद, परिसमापन के समय, अपनी पूँजी प्राप्त करना।

- In other words, as compared to the equity shareholders, the preference shareholders have a preferential claim over dividend and repayment of capital.
- Preference shares resemble debentures as they bear fixed rate of return. Also as the dividend is payable only at the discretion of the directors and only out of profit after tax, to that extent, these resemble equity shares.
- Thus, preference shares have some characteristics of both equity shares and debentures. Preference shareholders generally do not enjoy any voting rights.

- दूसरे शब्दों में, इक्विटी शेयरधारकों की तुलना में, अधिमान्य शेयरधारकों का लाभांश और पूँजी के पुनर्भुगतान पर अधिमान्य दावा होता है।
- अधिमान्य शेयर डिबेंचर जैसे होते हैं क्योंकि इन पर निश्चित दर से प्रतिफल मिलता है। साथ ही, चूँकि लाभांश केवल निदेशकों के विवेक पर और केवल कर-पश्चात् लाभ में से देय होता है, इसलिए ये इक्विटी शेयरों जैसे होते हैं।
- इस प्रकार, अधिमान्य शेयरों में इक्विटी शेयरों और डिबेंचर दोनों की कुछ विशेषताएँ होती हैं। अधिमान्य शेयरधारकों को आमतौर पर कोई मतधिकार प्राप्त नहीं होता है।

Merits

- (i) Preference shares provide reasonably steady income in the form of fixed rate of return and safety of investment;
- (ii) Preference shares are useful for those investors who want fixed rate of return with comparatively low risk;
- (iii) It does not affect the control of equity shareholders over the management as preference shareholders don't have voting rights;

- (i) अधिमान्य शेयर, निश्चित प्रतिफल दर और निवेश की सुरक्षा के रूप में यथोचित रूप से स्थिर आय प्रदान करते हैं;
- (ii) अधिमान्य शेयर उन निवेशकों के लिए उपयोगी होते हैं जो तुलनात्मक रूप से कम जोखिम के साथ निश्चित प्रतिफल दर चाहते हैं;
- (iii) यह प्रबंधन पर डक्विटी शेयरधारकों के नियंत्रण को प्रभावित नहीं करता है क्योंकि अधिमान्य शेयरधारकों के पास मतदान का अधिकार नहीं होता है;

(iv) Payment of fixed rate of dividend to preference shares may enable a company to declare higher rates of dividend for the equity shareholders in good times;

v) Preference shareholders have a preferential right of repayment over equity shareholders in the event of liquidation of a company;

(vi) Preference capital does not create any sort of charge against the assets of a company

(iv) अधिमान्य शेयरों पर लाभांश की निश्चित दर का भुगतान किसी कंपनी को अच्छे समय में इक्विटी शेयरधारकों के लिए लाभांश की उच्च दर घोषित करने में सक्षम बना सकता है;

v) कंपनी के परिसमापन की स्थिति में अधिमान्य शेयरधारकों को इक्विटी शेयरधारकों पर पुनर्भुगतान का अधिमान्य अधिकार प्राप्त होता है;

(vi) अधिमान्य पूंजी किसी कंपनी की परिसंपत्तियों पर किसी प्रकार का भार नहीं लगाती है।

Limitations

Common MCQ
with Sachin Sir
Telegram

foundation clmu. live

- (i) Preference shares are not suitable for those investors who are willing to take risk and are interested in higher returns;
- (ii) Preference capital dilutes the claims of equity shareholders over assets of the company;
- (iii) The rate of dividend on preference shares is generally higher than the rate of interest on debentures;

- (i) अधिमान्य शेयर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त नहीं हैं जो जोखिम लेने को तैयार हैं और उच्च रिटर्न में रुचि रखते हैं;
- (ii) अधिमान्य पंजी कंपनी की परिसंपत्तियों पर इक्विटी शेयरधारकों के दावों को कम करती है;
- (iii) अधिमान्य शेयरों पर लाभांश की दर आम तौर पर डिबेंचर पर ब्याज दर से अधिक होती है;

- (iv) As the dividend on these shares is to be paid only when the company earns profit, there is no assured return for the investors. Thus, these shares may not be very attractive to the investors;
- (v) The dividend paid is not deductible from profits as expense. Thus, there is no tax saving as in the case of interest on loans.

- (iv) चूँकि इन शेयरों पर लाभांश का भुगतान केवल तभी किया जाता है जब कंपनी लाभ कमाती है, इसलिए निवेशकों के लिए कोई सुनिश्चित प्रतिफल नहीं होता। इसलिए, ये शेयर निवेशकों के लिए बहुत आकर्षक नहीं हो सकते हैं;
- (v) भुगतान किया गया लाभांश लाभ से व्यय के रूप में घटाया नहीं जा सकता। इस प्रकार, ऋणों पर ब्याज की तरह कोई कर बचत नहीं होती।